ICWA

# ASEAN - INDIA

## Youth and Socio-Cultural Connectivity

### आसियान-भारत : युवा और सामाजिक-सांस्कृतिक संपर्क

Editor

**Prof. Anju Chaudhary, Mrs. Archana Mishra**

Co-Editor

**Dr. Preeti Dwivedi, Dr. Saba Yunus**

## 4

# भारतीय युवा महिलाओं में मूक बधिरता एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्रो. राजीव कुमार, नैना शुक्ला

**परिचय-** ''विकलांग होने का मतलब यह नहीं होना चाहिए कि आप जीवन के हर पहलू तक पहुँच से वचित हो जाएँ।''
**- (एम्मा थॉम्पसन)**

विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (2006) के एक अनुच्छेद के अनुसार ''विकलांग व्यक्तियों में वे लोग शामिल हैं जिनमें दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकलांगताएँ हैं। जो विभिन्न बाधाओं के साथ मिलकर दूसरों के साथ समान आधार पर समाज में उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा उत्पन्न कर सकती है।'' भारत में विकलांग व्यक्ति अधिनियम 1995 के अनुसार, किसी भी विकलांगता के कम से कम चालीस प्रतिशत से पीड़ित व्यक्ति को कुछ अन्य विशेषाधिकारों के साथ सक्षम चिकित्सा प्राधिकरण द्वारा प्रमाणित किया गया है।

महिलाओं की स्थिति के सम्बन्ध में सभ्यता में महिलाओं के महत्व का अंदाजा समाज में महिलाओं को दिए गए स्थान से लगाया जा सकता है। भारत की प्राचीन संस्कृति की महानता को सही ठहराने वाले कई कारकों में से एक महिलाओं को दिया गया सम्मानित स्थान है। महान विधि निर्माता मनु ने बहुत पहले कहा था ''जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है, वहाँ भगवान का वास होता है।'' प्राचीन हिंदू शास्त्रों के अनुसार कोई भी धार्मिक अनुष्ठान बिना अपनी पत्नी की भागीदारी के पुरुष द्वारा पूर्णता के साथ नहीं किया जा सकता है।

किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में पत्नी की भागीदारी आवश्यक है, इसलिए पत्नियों को ''अर्धनारी'' (बेहतर अर्धांगिनी) कहा जाता है। उन्हें न केवल महत्व दिया जाता था बल्कि पुरुषों के बराबर का दर्जा भी दिया जाता था। विभिन्न आक्रमणों के आगमन के बाद महिलाओं के प्रति भारतीय समाज का दृष्टिको[illegible] और बदल



गया। उन्हें पुरुषों के साथ समानता के उनके अधिकार से वंचित किया गया। राजा राम मोहन राय ने इस असमानता और अधीनता के खिलाफ आन्दोलन शुरू किया। ब्रिटिश संस्कृति के साथ भारतीय संस्कृति के सम्पर्क ने भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाया।

महिलाओं की स्थिति के पुनरुद्धार में अन्य महत्वपूर्ण कारक महात्मा गाँधी का प्रभाव था, जिन्होंने महिलाओं को स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। स्वतन्त्रता की इस पुनः प्राप्ति के परिणामस्वरूप भारत में महिलाओं ने अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली शिक्षिकाओं, नर्सों, एयरहोस्टेस, इंजीनियर, डाक्टर और अन्य के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्हें अपने भविष्य को आकार देने और खुद के लिए अपने परिवार और अपने देश के लिए जिम्मेदारियों को साझा करने में पुरुषों के साथ समानता दी गई है। वे कुछ भी करती हैं, उसमें पूरी मेहनत लगा देती हैं। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारत में महिलाओं ने पिछले पचास वर्षों में काफी प्रगति की है, लेकिन फिर भी उन्हें कई बाधाओं और कठिनाइयों से जूझना पड़ता है।

जन्म से पहले से ही महिलाओं के प्रति भेदभाव शुरू होने और मृत्यु तक तथा मृत्यु के बाद भी जारी रहने के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है। वंचित परिस्थितियों में रहने वाली महिलाओं के बारे में चिंताजनक रिपोर्ट है।

### अध्ययन का महत्व-

महिलाएँ और विकलांगता एक बढ़ती हुई चिंता है और लगता है कि यह तेजी से बढ़ रही है। पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार ''जब महिलाएँ आगे बढ़ती हैं तो परिवार आगे बढ़ता है, परिवार आगे बढ़ता है गाँव आगे बढ़ता है'' लेकिन विकलांग महिलाएँ तिहरे भेदभाव से पीड़ित हैं। हालाँकि दुनिया ने 1975 में महिलाओं का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष और 1981 में विकलांगों का वर्ष मनाया, लेकिन वे परिवार और समाज में उपलब्ध कई अवसरों से वंचित है, खासकर विकलांग महिलाएँ कई सुविधाओं तक पहुँच से वंचित हैं।

### विकलांगता और महिलाएँ-

भारतीय समाज में विकलांग महिलाएँ सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं। यह कमजोरी वर्ग और जाति के सभी वर्गों में मौजूद हैं। महिला होने के कारण वे तीन तरह के संकटों से जूझती हैं। एक तो विकलांग होने के कारण पुरुष और महिलाएँ समान रूप से पीड़ित हैं। लेकिन कुछ समस्याएँ सिर्फ महिलाओं की ही हैं। पितृसप्तात्मक समाज में अगर विकलांगता लड़के व लड़कियों को एक ही तरह प्रभावित करती है, वो लड़कियों को लड़कों की तुलना में ज्यादा अपमान सहना पड़ता है। भारत में आमतौर

पर बेटे के जन्म पर हमेशा जश्न मनाया जाता है, लेकिन लड़की के जन्म पर कभी ऐसा जश्न नहीं मनाया जाता है और विकलांग लड़की का जन्म हमेशा अभिशाप माना जाता है। विकलांग लड़का ज्यादा स्वीकार्य है।

विशेष विद्यालयों को ध्यान में रखते हुए, आवासीय विद्यालय है, जो अधिकतर मूक बधिर लड़कियों के लिए हैं अन्यथा लड़कियाँ अपने परिवार के साथ रहती हैं, लेकिन क्या होगा यदि उन्हें उचित देखभाल और सम्मान के बिना अकेला छोड़ दिया जाए? यदि माता-पिता एक शिक्षा का खर्च उठा सकते हैं तो वे लड़के को पढ़ाना पसंद करेंगे। भारत में विकलांग महिलाएँ कुल विकलांग आबादी का लगभग 48 प्रतिशत हैं। वे अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य स्थिति के मामले सबसे अधिक हाशिए पर है। उन्हें किसी भी तरह के शोध, राज्य की नीतियों और कार्यक्रमों, जन-आंदोलनों और पुनर्वास और कार्यक्रमों में प्राथमिकता समूह के रूप में नहीं माना जाता है। मूक बधिरता से जुड़े कलंक और भेदभाव के कारण वे सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी से और भी अलग थलग है। जैसा कि आइरीन फेका कहती हैं "अनेक सामाजिक मानकों के कारण वे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से बाहर रह विकलांग महिलाओं के लिए विशेष रूप से सच है जहाँ पत्नी और मां की भूमिका को महिलाओं की प्राथमिक भूमिका माना जाता है।" जैसे-जैसे हम "मूल्य श्रंखला" में आगे बढ़ते हैं, विकलांगता प्रमाण-पत्र, कौशल तक पहुँच, वेतन/स्वरोजगार के अवसर, सहायक उपकरण, स्वास्थ्य जांच सुरक्षा पहलू और निर्णय लेने की प्रक्रिया में आगे बढ़ते हैं, हक की विफलता की कहानी जारी रहती है। जानकारी के अभाव के कारण जागरूकता की कमी पहली ओर बड़ी अड़चन प्रतीत होती है एवं इस शोध-पत्र में शारीरिक विकलांगता के अन्तर्गत आने वाली मूक बधिर विकालांगता को महिलाओं में पायी जाने वाली समस्याओं पर आधारित हैं आज ये समस्या वैश्विक स्तर पर पायी जा रही है, जोकि एक चिन्तनीय विषय हैं।

मूक बधिर विकलांगता के अन्तर्गत व्यक्ति बोलने व सुनने में सक्षम नहीं होता है एवं अपने मन के भावों को सांकेतिक भाषा के रूप में प्रकट करता है। मूक बधिर व्यक्ति हाथों के इशारों से या ओष्ठ पठन से वार्तालाप करता है, यह समस्या महिलाओं के लिए विशेष चिन्तन का विषय है। "भारतीय युवा महिलाओं में मूक बधिरता - एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण" यह विकलांगता भारतीय देशों में भी पायी जा रही है जो कि एक वैश्विक काल बन कर हमारे सामने खड़ी है। इसी को आधार मान कर इस शोध-पत्र को कानपुर जिले में मूक बधिर से पीड़ित महिलाओं पर आधारित किया है।



## मूक बधिर युवा महिलाओं का सामाजिक आर्थिक पार्श्वचित्र

| सामाजिक आर्थिक पार्श्वचित्र | विवरण | | | | आवृत्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक आय | 5000-8000<br>12% | 8000-11000<br>36 % | 11000-14000<br>28 % | 14000 से ऊपर<br>24 % | 100 |
| शैक्षिक स्थिति | निरक्षर<br>6 % | प्राथमिक<br>18 % | माध्यमिक<br>32% | उच्चतर<br>44 % | 100 |
| आवासीय स्थिति | किराए पर<br>65 % | स्वयं<br>30 % | रिश्तेदार<br>5% | | 100 |
| धार्मिक संरचना | हिन्दू<br>45 % | मुस्लिम<br>55 % | अन्य<br>5% | | 100 |
| जातिगत स्थिति | उच्च जाति<br>10 % | पिछड़ी जाति<br>10 % | अनुसूचित जाति<br>40% | मुस्लिम जाति<br>40 % | 100 |
| पारिवारिक स्थिति | एकाकी परिवार<br>70 % | संयुक्त परिवार<br>30 % | | | 100 |

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है मूक-बधिर महिलाओं के सामाजिक पार्श्वचित्र में उनकी शिक्षा से लेकर उन्हें पारिवारिक संरचना को और बेहतर बनाना होगा। जिससे इनकी स्थितियों में सुधार लाया जा सके।

## मूक बधिर युवा महिलाओं का सामाजिक पुनर्वास

| सामाजिक पुनर्वास | विवरण | | | | आवृत्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| जन्म से मूक बधिरता की स्थिति | जन्म से 65% | 1-3 वर्ष 12% | 4-5 वर्ष 18% | 5 वर्ष से अधिक 5% | 100 |
| दैनिक गतिविधियों का अवलोकन | स्वयं 78% | किसी की मदद 18% | पूर्णतया निर्भर 4% | | 100 |
| सामाजिक मनोवृत्तियों का मूल्यांकन | अच्छा व्यवहार 12% | सीमित 22% | खराब 66% | | 100 |
| सुधार का स्तर | धीमा 77% | सीमित 10% | तीव्र 13% | | 100 |
| व्यवहार की स्थिति | कुछ क्रोध करना | मानसिक तनाव | चिड़चिड़ापूर्ण व्यवहार | सहयोगपूर्ण व्यवहार | 100 |
| देखभाल का उत्तरदायित्व | केवल पिता 2% | केवल माता 5% | माता पिता दोनों 91% | किसी अन्य व्यक्ति पर 2% | 100 |
| सरकारी योजनाओं की जानकारी | कोई जानकारी नहीं 80% | कुछ जानकारी है 15% | समस्त योजनाओं की जानकारी 5% | | 100 |
| विकलांगता प्रमाण पत्र की स्थिति | हाँ | नहीं | | | 100 |

उपर्युक्त सारणी से ज्ञात हुआ है कि सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं है। जिससे उनकी स्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है।

## मूक-बधिर युवा महिलाओं का पारिवारिक प्रकार का विवरण

| परिवार का प्रकार | सूचनाओं से प्राप्त आँकड़े | प्रतिशत |
|---|---|---|
| एकल अभिभावक परिवार | 9% | 9 % |
| एकाकी परिवार | 78% | 78% |
| संयुक्त परिवार | 13% | 13% |
| कुल | 100% | 100% |

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मूक बधिर युवा महिलाएँ एकाकी परिवारों में रहती हैं। जिससे वे ज्यादा संकुचित व्यवहारों में रहती हैं।



### शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र कानपुर जिले पर आधारित मूक बधिर महिलाओं पर केन्द्रित है एवं इस शोध पत्र में उत्तरदाताओं की संख्या 100 है एवं 18-35 वर्ष की महिलाओं पर केन्द्रित है एवं अध्ययन पद्धति में वर्णनात्मक पद्धति के साथ-साथ स्नोबॉल सैम्पलिंग का भी प्रयोग किया गया है तथा प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों का भी प्रयोग किया गया है। जिसमें अवलोकन, साक्षात्कार इत्यादि। वर्तमान अध्ययन भारतीय परिदृश्य में मूक बधिर महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने का एक प्रयास है।

### निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकलता है कि विकलांग महिलाओं की सामाजिक स्थिति के साथ किस तरह भेदभाव किया जाता है। इस स्थिति को बदलना होगा और यह समय की माँग है। आजकल अधिकतर विषय अन्य सामान्य समस्याओं को अधिक महत्व देते हैं। लेकिन मूक बधिरता से पीड़ित महिलाओं के मामले में समाज की सोच और नजर में बदलाव नहीं हुआ है। इसे केवल लोगों में उचित जागरूकता और विकलांग महिलाओं के प्रति सरकारी सहायता को बढ़ाकर ही किया जा सकता है। सरकार द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के अतिरिक्त भी आज सबको जागरूक होकर इन्हें नया दर्जा देकर जीवन की धारा के साथ जोड़ना चाहिए।

### सन्दर्भ


1. अग्रवाल रेनू, स्टुअर्ट ब्लूम, विकलांगता और समाज, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2000।
2. आहूजा कुमार, पटेल, महिलाएँ और सतत विकास : एक अन्तर्राष्ट्रीय आयाम, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1995।
3. आहूजा राम, भारत में सामाजिक समस्याएँ, रावत प्रकाशन, जयपुर और नई दिल्ली, 1997
4. चंद कृष्ण, विकलांगों और अपाहिजों के लिए मनोविज्ञान की भूमिका, मेट्रोपॉलिटन, नई दिल्ली, 1994।
5. ढोंडा पूनम, भारत में महिलाओं की स्थिति, [illegible] प्रकाशक, दिल्ली, 2012।
6. देसाई नीरा, मैत्रेयी कृष्णराज, भारत में महिलाएँ और समाज, अजंता प्रकाशन, दिल्ली, 1987
7. डीगन एम०जे०, ब्रुक्स एन०ए० (सं.) महिलाएँ और विकलांगता, दोहरी बाधा एन०जे०, ट्रांजेक्शन बुक्स, न्यू ब्रंसविक, 1985।
8. पति आर०एन० विकलांग महिलाएँ मुद्दे और चुनौतियाँ, सत्यम पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011।
9. ऑलिवर डी, विकलांगता और कल्याण, मैकमिलन प्रकाशन, लंदन, 1983।
10. मेहता डी०एस०, भारत में विकलांगता की भूमिका, मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1983


✱